

हिमशिखर

चौबीसवाँ अंक (24वाँ अंक)

हिंदी पत्रिका 2024

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय

एवं

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय

सिक्किम, गंगटोक-737102



अनुक्रमणिका

क्रं. संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	हिमशिखर परिवार		2
2.	राजभाषा प्रतिज्ञा		3
3.	हिन्दी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश		4-7
4.	महालेखाकार का संदेश		8
5.	उपमहालेखाकार का संदेश		9
6.	उपमहालेखाकार का संदेश		10
7.	कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक का संदेश		11
8.	कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक का संदेश		12
9.	सम्पादकीय		13
10.	आप के पत्र		15
11.	पैसा पाने के लिए पैसा दें	श्री सर्वोत्तम कुमार गुप्ता (सहायक पर्यवेक्षक)	16
12.	दुविधा	श्रीमती मौसमी भौमिक (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)	18
13.	गुस्से की दवा	श्रीमती सुनीता गुप्ता /पत्नी, श्री एस. के. गुप्ता (सहायक पर्यवेक्षक)	19
14.	समय की कीमत	श्रीमती सुनीता गुप्ता /पत्नी, श्री एस. के. गुप्ता (सहायक पर्यवेक्षक)	22-23
15.	नारी	सुश्री मधु कुमारी/भांजी, श्री विपिन भास्कर(लेखापरीक्षक)	25
16.	दार्जीलिंग की सुहानी यात्रा	श्री बिनोद कुमार छेत्री (लेखाकार) संग पत्नी श्रीमती रबीना छेत्री	27-29
17.	माँ	श्रीमती सुषमा देवी/बहन, श्री विपिन भास्कर (लेखापरीक्षक)	35
18.	सिक्किम से मेरा पहला परिचय	सुश्री दीपा उराँव (कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक)	37-38

19.	ज़िंदगी का सफ़र	श्री शुभम शुक्ला (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)	39
20.	पेरिस ओलम्पिक खेल 2024 एवं एफिल टावर के रोचक तथ्य	श्री गौतम तमांग (सेवानिवृत्त)	41-43
21.	उसका बचपन	श्री हीरेश कुमार तिवारी /भाई, श्री धीरेश कुमार तिवारी (डाटा एंट्री ओपरेटर)	45
22.	ज़िंदगी	श्री हीरेश कुमार तिवारी /भाई, श्री धीरेश कुमार तिवारी (डाटा एंट्री ओपरेटर)	46
23.	कोलकाता का स्ट्रीट फूड : एक स्वादिष्ट सफ़र	श्री कुंतल कुमार माजी (लेखाकार)	47-48
24.	अच्छी हूँ	श्रीमती मौसमी भौमिक (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)	50
25.	सिक्किम में चाय की खेती : परंपरा और प्रकृति का मिश्रण	श्री मंतोष कुमार सिंह (लेखाकार)	52
26.	अकेले आए थे अकेले ही चले जाएंगे	श्रीमती श्रीकांती देवी/ माँ, श्री मंतोष कुमार सिंह (लेखाकार)	56
27.	अनजान निगाहें	श्री मोहित (लेखाकार)	58
28.	रहस्य	श्री सर्वोत्तम कुमार गुप्ता (सहायक पर्यवेक्षक)	62
29.	अच्छाई और बुराई	सुश्री अनुपमा गुप्ता/पुत्री, श्री एस.के. गुप्ता	64
30.	गुरु और शिष्य	सुश्री अनुपमा गुप्ता/पुत्री, श्री एस.के. गुप्ता	65
31.	दिल्ली की सड़कों पर थाली भर भोजन	सुश्री चंचल (कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक)	66-70
32.	स्त्री	सुश्री मधु कुमारी/भांजी, श्री विपिन भास्कर(लेखापरीक्षक)	71
33.	आशा का भिखारी	कृष्ण कुमार मीणा (लेखापरीक्षक)	73

हिमशिखर परिवार

संरक्षक

श्रीमति नर्मदा रा.
महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

परामर्शदाता

श्री नसीफ अब्दुल कादेर,
(उपमहालेखाकार)
श्री जे. शंकर राम
उपमहालेखाकार

सम्पादक

सुश्री दीपा उराँव
कनिष्ठ हिंदी
अनुवादक

टंकण कार्य

सुश्री दीपा उराँव
कनिष्ठ हिंदी
अनुवादक

सुश्री चंचल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कार्यालय प्रमुख के नाम

श्रीमती नर्मदा रा.
(महालेखाकार)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
सिक्किम, गंगटोक

श्री नसीफ अब्दुल कादेर,
(उपमहालेखाकार)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
सिक्किम, गंगटोक

श्री जे. शंकर राम
(उपमहालेखाकार)
कार्यालय व. उपमहालेखाकार (लेखा एवं हक)
सिक्किम, गंगटोक



राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के
अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम,
केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि
अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से;
अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से;
प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे,
उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे;
अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए ;
अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा-हिंदी का प्रयोग,
और प्रसार बढ़ाएंगे ।
हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे ।

जय राजभाषा ! जय हिन्द





हिंदी दिवस 2024
के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश



राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

**अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार**



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदय को सौंप दिया है।

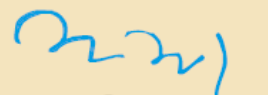
राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

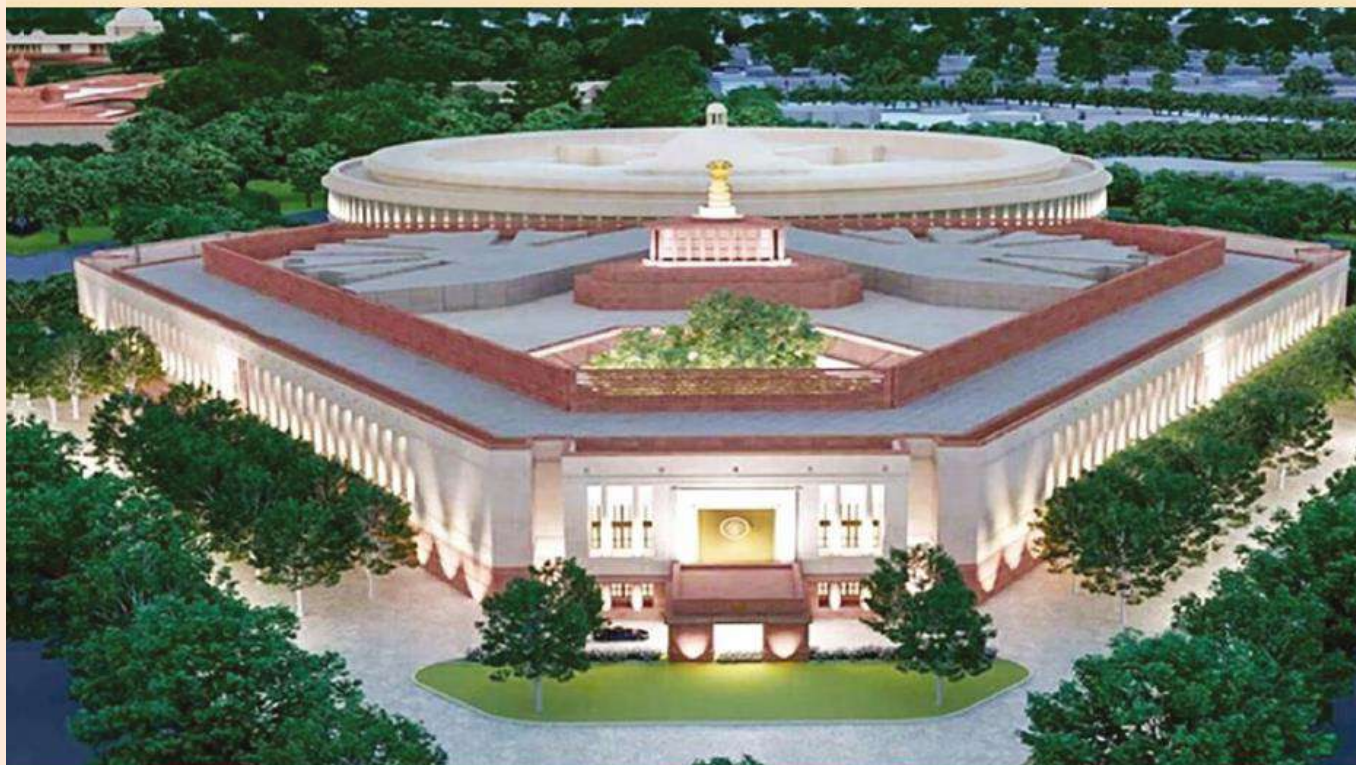
दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024


(अमित शाह)

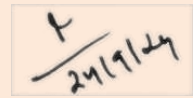




महालेखाकार का संदेश

“हिमशिखर” के इस नए अंक के माध्यम से आप सबसे रूबरू होते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। कार्यालय में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में यह एक सशक्त कदम है। हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि कार्यालय के कार्यों में सहज हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें जिससे हिन्दी की कार्यालयी उपयोगिता संभव हो सके।

अपने दैनिक कार्यों में व्यस्तता के बावजूद “हिमशिखर” के लिए रचना प्रेषित करने वाले रचनाकारों, पत्रिका की संपादक मंडली एवं टंकण मंडली को सुरुचिपूर्ण संग्रहणीय एवं आकर्षक पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई देती हूँ। मुझे आशा है कि यह अंक अपने नूतन पृष्ठपठ, साज-सज्जा एवं रचनाओं के नयनाभिराम प्रस्तुतीकरण के कारण पूर्व के अंकों की भांति लोकप्रिय होगा तथा राजभाषा से जुड़े सभी सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों के बीच हमारे कार्यालय की छवि बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन पर बधाई एवं पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।



श्रीमती नर्मदा रा.
महालेखाकार



उपमहालेखाकार का सन्देश

मुझे अपने कार्यालय की हिंदी पत्रिका "हिमशिखर" का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अति प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका के प्रकाशन से हिंदी के प्रचार-प्रसार को व्यापक एवं प्रभावी बनाने में सफलता प्राप्त होगी तथा कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के साथ-साथ अपनी सृजनात्मकता एवं कौशलता का प्रदर्शन करने का अवसर मिलेगा।

कार्यालय दिनचर्या की व्यस्तता होने के बावजूद अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपनी रचनाओं का समावेश कर अपना योगदान दिया है। पत्रिका कार्यालय के कर्मिकों की मौलिकता एवं सृजनात्मकता को उजागर करने में सफल हुई है। रचनाकारों ने अपनी कविताओं, लेखादि के माध्यम से अपने मन के भावों एवं विचारों को सरल एवं रुचिकर ढंग से प्रस्तुत किया है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडली, अधिकारियों/कर्मचारियों एवं सभी रचनाकारों को हृदय से बधाई देता हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार में उपयोगी तथा सार्थक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए भी मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री जे. शंकर राम
उपमहालेखाकार



उपमहालेखाकार का सन्देश

मेरी ओर से आप सभी को हिमशिखर पत्रिका के नवीनतम संस्करण के प्रकाशन के लिए बहुत - बहुत बधाई। कार्यालय की गृह पत्रिका के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत गर्व महसूस हो रहा है। मैं हिमशिखर परिवार के सभी लेखकों, पाठकों और संपादकीय सहयोगियों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सद्प्रयासों से यह पत्रिका यहाँ तक पहुँचने में समर्थ हुई है।

यह पत्रिका हमारी राजभाषा को बढ़ावा देने की दिशा में एक छोटा सा प्रयास है। हम सब मिलकर सक्रिय भूमिका निभाकर इसे नई ऊँचाइयों पर ले जा सकते हैं। राजभाषा हिंदी के प्रति हम सभी को निष्ठावान बनाने की दिशा में हिमशिखर परिवार से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए मैं इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

श्री नसीफ अब्दुल कादेर,
उपमहालेखाकार



कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक का संदेश

हमें यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारी हिन्दी पत्रिका का नया अंक अब आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अंक में हमने अपनी भाषा, साहित्य, समाज और संस्कृति के विविध पक्षों पर गहन चर्चा करते हुए नई जानकारियों और प्रेरणादायक कहानियों को सम्मिलित किया है। हिमशिखर पत्रिका न केवल हिंदी भाषा के समृद्ध स्वरूप को दर्शाती है, बल्कि इसके माध्यम से हम राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी अपना योगदान दे रहे हैं।

इस बार के विशेष अंक में आपको नए लेखकों की रचनाएँ, समसामयिक मुद्दों पर विचार-विमर्श और कई महत्वपूर्ण विषयों पर हिंदी में जानकारी प्राप्त होगी। हमारा उद्देश्य हिंदी भाषा को और अधिक सशक्त बनाना और इसे जन-जन तक पहुँचाना है और इस दिशा में आपका सहयोग अनमोल है। हमें आशा है कि यह नया अंक आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा और आपको ज्ञानवर्धक सामग्री प्रदान करेगा। “हिंदी से हमारा जुड़ाव हमारी पहचान और संस्कृति से जुड़ाव है। आईए, हिंदी को और समृद्ध बनाते हुए इसका सम्मान करें।”

आपके सुझाव और विचारों का हमें हमेशा स्वागत है।

सुश्री दीपा उराँव

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक



कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक का संदेश

भारत विविधताओं से भरा देश है। यहाँ अलग-अलग धर्म व जाति के लोग रहते हैं। अलग-अलग भाषाएँ, बोलियाँ बोलने वाले, अलग-अलग वेश-भूषा, खानपान व संस्कृति के लोग रहते हैं। यह हिंदी भाषा ही है जो देश के सभी लोगों को एकता के सूत्र में पिरोती है। देश को एक रखने में हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। हिंदी भावों की अभिव्यक्ति का सबसे सरल जरिया भी है। हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और एकता व अस्मिता का प्रतीक है। हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाती है और हमें विश्व में एक अलग पहचान दिलाती है।

इस पत्रिका द्वारा हमारा यह प्रयास है कि हम अपने युवा पीढ़ी को सृजन की ओर अग्रसित करें। उनमें रचनात्मक और मौलिकता का विकास हो। हमारी पत्रिका ने निःसंदेह कार्यालय में हिंदी भाषा के प्रयोग में सतत वृद्धि एवं हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमें पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी यह क्रम जारी रहेगा।

इस पत्रिका के संपादक सहयोग हेतु मैं संपादक मंडली के सभी सदस्यों एवं रचना प्रेषित करने वाले रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। साथ ही मैं हमारे महालेखाकार एवं उपमहालेखाकार महोदयों का आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके कुशल व स्नेहिल मार्गदर्शन के कारण पत्रिका में अपेक्षित परिवर्तन किया जाना संभव हो सका है।

आशा है कि अब तक आपने जो स्नेह हिमशिखर को दिया है वही स्नेह इस अंक को भी देंगे।

पंचल
सुश्री चंचल

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



संपादकीय

हमें यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय का वार्षिक हिंदी पत्रिका 'हिमशिखर' का 24वाँ अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। हिन्दी, हमारी राजभाषा, देश की पहचान और हमारी सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग है। इसे बढ़ावा देने और व्यापक स्तर पर प्रयोग करने के लिए हर स्तर पर प्रयासों की आवश्यकता है। इस दिशा में हिन्दी पत्रिकाएँ एक महावपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वे ना केवल हिन्दी भाषा के प्रसार में सहायक हैं, बल्कि इसे समृद्ध और सशक्त भी बना रही हैं।

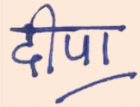
हिमशिखर के माध्यम से हमारे अधिकारी और कर्मचारी अपनी रचनात्मकता और लेखन क्षमता को प्रस्तुत कर रहे हैं। साथ ही साथ वे हिन्दी भाषा के प्रति समर्पण और गर्व को भी प्रकट कर रहे हैं। इस पत्रिका का उद्देश्य कार्यालय के वातावरण में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। लेखन, कविताएँ और आलेख न केवल हमारे कर्मचारियों की लेखन क्षमता का प्रमाण हैं, बल्कि यह उनके सृजनात्मक विचारों और अनुभवों को साझा करने का एक महत्वपूर्ण मंच भी प्रदान करता है। हिन्दी में अपने विचार व्यक्त करना हमारी संस्कृति को सम्मान देने का तरीका है और साथ ही यह हमारी संवैधानिक प्रतिबद्धता का पालन भी है।

मैं इस अवसर पर उन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की सराहना करना चाहती हूँ जिन्होंने पत्रिका के निर्माण में योगदान दिया। आपकी लेखनी ने इसे ज्ञान, प्रेरणा और सृजनात्मकता का संगम बना दिया है। यह पत्रिका आपकी मेहनत और समर्पण का एक सजीव उदाहरण है।

'हिमशिखर' हमारे कार्यालय के कर्मचारियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह पत्रिका हिन्दी के प्रति हमारे कार्यालय की प्रतिबद्धता को और मजबूत बनाती है। हमें विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से आप सभी को कुछ नया सीखने और समझने को मिलेगा और हिन्दी में कार्य करने के ले एक नई प्रेरणा भी मिलेगी।

अंत में, मैं सभी पाठकों से अनुरोध करती हूँ कि वे इस पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए अपने सुझाव और विचार हम तक पहुँचाएँ। आईए, मिलकर हिन्दी को अपने कार्य का अभिन्न हिस्सा बनाएँ और इसे और प्रासंगिक बनाएँ।

धन्यवाद।


संपादक,
दीपा उराँव,
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक



**महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा), देवराली, सिक्किम ,
गंगटोक**

पैसा पाने के लिए पैसा दें

सर्वोत्तम कुमार गुप्ता
सहायक पर्यवेक्षक

पैसा दान देना अपने जीवन में ज्यादा पैसा प्राप्त करने की जबरदस्त तकनीक है क्योंकि यह करते समय हम यह कह रहे हैं कि हमारे पास बहुत पैसा है। हैरानी की कोई बात नहीं है कि दुनिया के सबसे दौलतमंद लोग सबसे बड़े दानवीर होते हैं। वे बहुत बड़ी रकम दान में देते हैं और इसके बाद आकर्षण के नियम के माध्यम से ब्रह्माण्ड बदले में उन्हें ढेर सारी दौलत प्रदान करता है। अगर ऐसा लगे कि मेरे पास देने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं हैं, तो देना शुरू कर दें। जब हम देने की आस्था दर्शाते हैं, तो आकर्षण का नियम हमें ज्यादा पैसा देगा ताकि हम और ज्यादा दान कर सकें। दान देने और त्याग करने में बड़ा फर्क होता है। दान सुखद भावनाओं से भरे दिल से दिया जाता है, त्याग करते समय अच्छा महसूस नहीं होता, दोनों एक समान नहीं होते, यह बिल्कुल विपरीत है और एक कमी का संकेत भेजता है, दूसरा पर्याप्त से ज्यादा का संकेत भेजता है। त्याग अंततः द्वेष की ओर ले जाता है। पूरे दिल से दान देना आनंददायक कर्मों में से एक है और आकर्षण के नियम के अनुसार यह कर्म हमें मालामाल कर देगा। ऐसा करने से आप खुद ही फर्क महसूस करेंगे। मैंने बहुत से लोगों को देखा है, जो ढेर सारा पैसा तो कमाते हैं लेकिन लोगों से उनके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते हैं। यह असली दौलत नहीं है, पैसे के पीछे भागकर वे अमीर तो बन जाते हैं पर दौलतमंद नहीं बन पाते। ऐसा नहीं है कि पैसा दौलत का हिस्सा नहीं है लेकिन यह सिर्फ एक हिस्सा है।



आप साम्राज्य के वारिस हैं। समृद्धि आपका जन्मसिद्ध अधिकार है और जीवन के हर क्षेत्र में आपके हाथ में इतनी प्रचुरता की कुंजी है, जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। आप हर मनचाही अच्छी चीज के हकदार हैं और ब्रह्माण्ड आपको वह चीज देगा लेकिन आपको अपने जीवन में इसका आह्वान करना होगा। जब आप ये जान लेंगे तो आपके पास वो कुंजी मिल जाएगी जो जिंदगी भर आपका साथ देगी।

बहुत से लोग सफलता की खोज में जुटे रहते हैं, वे बड़ा मकान चाहते हैं, अपने व्यवसाय में सफलता चाहते हैं, तमाम बाहरी चीजें चाहते हैं, पर इस बात की कोई गारंटी नहीं कि तमाम चीजें मिल जाने के बाद वे सचमुच खुश हो ही जाएँ। मामला उल्टा है। पहले अंदरूनी खुशी, अंदरूनी शांति, अंदरूनी भविष्य दृष्टि की ओर जाना होता है, इसके बाद ही तमाम बाहरी चीजें प्रकट होती हैं। हर चीज जो आप जानते हैं, अन्दर का काम है। बाहरी जगत परिणामों का संसार है। यह आपके विचारों का परिणाम है। अपने मन में खुशी और आनंद की भावनाएँ भर लें और पूरी शक्ति से उन्हें ब्रह्माण्ड की ओर भेजें। ऐसा करने पर आपको यह धरती स्वर्ग जितनी सुन्दर लगेगी।

...

योग दिवस - 21 जून 2024



आइए हम सब मिल कर स्वस्थ रहने की ओर कदम बढ़ाएं
स्वस्थ रहने की इसी कामना के साथ
अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

दुविधा



मौसुमी भौमिक
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरे अंदर अमृत और विष दोनों हैं,
वे पूरे दिन साथ रहते हैं,
दोनों एक दूसरे से बातें करते हैं।
जब वे साथ होते हैं, तो मैं काफी अच्छी रहती हूँ।

लेकिन मानवीय स्थिति से कभी-कभी
मुझे अमृत अधिक प्रिय लगता है।
परन्तु, विष तभी अपने दाँत और नाखून निकाल के
मेरे अन्दर प्रकट होता है।
और मैं उसके सामने मुझे समर्पित करती हूँ।
फिर भी अमृत, अपनी अमृत गुण से
मुझे पुनः प्राप्त कर लेता है,
और मैं फिर से अमृत को प्यार करने लगती हूँ।

अमृत सर्वदा विष से अधिक सुन्दर और मनमोहक होता है।



गुस्से की दवा

सुनीता गुप्ता
(पत्नी, एस.के.गुप्ता)
सहायक पर्यवेक्षक

एक स्त्री थी। उसे बात-बात पर गुस्सा आ जाता था। उसकी इस आदत से पूरा परिवार परेशान था। उसकी वजह से परिवार में कलह का माहौल बना रहता था। एक दिन उस महिला के दरवाजे पर एक साधु आया। महिला ने साधु को अपनी समस्या बताई, उसने कहा - महाराज मुझे बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है। मैं चाहकर भी अपने गुस्से पर नियंत्रण नहीं रख पाती, कोई उपाय बताइए। साधु ने अपने झोले से एक दवा की शीशी निकाली और उसे दी और कहा कि जब भी गुस्सा आए इसमें से 4 बूँद दवा अपनी जीभ पर डाल लेना, 10 मिनट तक दवा को अपने मुँह में ही रखना है, 10 मिनट तक मुँह नहीं खोलना है नहीं तो दवा असर नहीं करेगी।



महिला ने वैसा ही किया जैसा साधु ने बताया था। 7 दिन में ही उसकी गुस्सा करने की आदत छूट गई। 7 दिन बाद फिर वह साधु उसके दरवाजे पर आया, तो महिला उसके पैर पर गिर गई, उसने कहा महाराज, आपकी दवा से मेरा क्रोध गायब हो गया, अब मुझे गुस्सा नहीं आता और मेरे परिवार में अब शांति है। तब साधु महाराज ने उसे बताया कि वह कोई दवा नहीं थी, उस शीशी में केवल पानी भरा था, गुस्से का इलाज केवल चुप रहकर ही किया जा सकता है क्योंकि गुस्से में व्यक्ति उल्टा सीधा बोलता है, जिससे विवाद बढ़ता है, इसीलिए क्रोध का इलाज केवल मौन है।



...

स्वतन्त्रता दिवस समारोह - 2024





समय की कीमत

सुनीता गुप्ता
(पत्नी, एस.के.गुप्ता)
सहायक पर्यवेक्षक



अरे! मुझे तो समझ नहीं आ रहा कि आखिर कमी क्या है तुम्हारे पास ? बड़ा घर, गहने, महँगी साड़ियाँ सब कुछ तो है, और वैसे मैं क्यों तुम्हारे साथ माथा पच्ची कर रहा हूँ, इतना समय ही कहाँ है ? मैं तुम्हारी इन फ़िज़ूल की बातों में समय क्यों खर्च करूँ ? - राम सिंह जी अपनी पत्नी शांति देवी को जोर-जोर से बोलते जा रहे थे। अरे, मुझे तो लगता है कि तुम्हारा किसी दिमाग के डॉक्टर से इलाज करवाना पड़ेगा। बेवजह खुद भी परेशान होती हो और मुझे भी परेशान कर रखा है। आखिर प्रॉब्लम क्या है तुम्हारी ? इतने बड़े घर में भी तुम्हें घुटन होती है, डेढ़ महीना हो चुका है हमें इस घर में आए हुए लेकिन तुमने तो बस एक ही रट लगा रखी है कि मेरा यहाँ मन नहीं लगता, मुझे घुटन होती है। मैं तो जब भी ऑफिस से आता हूँ, तो तुम्हारा उदास चेहरा ही देखने को मिलता है। ऐसा भी नहीं कि सिर्फ इसी घर में तुम्हें घुटन होती है, तुम अपने पुराने घर में भी इसी तरह बहकी-बहकी बातें करती रहती थी। मुझे तो लगता है कि एक दिन तुम मुझे पागल बनाकर छोड़ोगी, शांति देवी भीगी आँखे लिए राम सिंह जी की बातें सुन रही थी। राम सिंह जी फिर बोले- अब तो हमारा बेटा भी सेटल हो गया है और उसकी शादी करके हम जिम्मेदारियों से भी मुक्त हो गए हैं, इससे ज्यादा और क्या चाहती हो ? वैसे मुझे भी समझ नहीं आ रहा, मैं इतना क्यों तुम्हें बोल रहा हूँ ? तुम्हारी इन फ़िज़ूल की बातों में अपना समय क्यों व्यर्थ करूँ ! राम सिंह जी गुस्से से बोले, तो शांति देवी के चेहरे पर एकाएक कड़वाहट आ गई और वह बोली - हाँ मुझे देने के लिए तुम्हारे पास समय ही कहाँ है। दिनभर ऑफिस में बिता देते हो और रात को लौटते हो तो अपना मोबाइल लेकर बैठ जाते हो, हर रोज ऐसा ही होता है। आप बाहर चले जाते हो, तो घर काटने को दौड़ता है, जिन्दगी थम सी जाती है, दम घुटने लगता है, ऐसा लगता है जैसे साँस ही नहीं आ रही। तो राम सिंह जी बोले - अरे ! शांति मुझे अपने लिए भी थोड़ा समय चाहिए या नहीं, बोरियत महसूस होती है, तो तुम भी टी.वी. देख सकती हो, अपना दिल तो तुम्हें खुद ही लगाना पड़ेगा। इस उम्र में अब मैं तुम्हें दिल लगाना सिखाने से रहा, इतना कहकर राम सिंह जी करवट बदलकर सो गए। अगली सुबह हुई तो राम सिंह जी नहा धो कर तैयार होकर अपनी नौकरी पर चले गए लेकिन इतना समझाने के बावजूद भी शांति देवी को फिर से अपना घर काटने को दौड़ने लगा। फिर उन्हें अपने पति की कही हुई बात याद आई कि अपना दिल तो खुद ही लगाना पड़ेगा।

शांति देवी संगीत की शौकीन थी इसलिए थोड़ी देर दिल बहलाने के लिए उन्होंने अपना मोबाइल उठाया और उस पर अपना मनपसंद गाना चला दिया। बालकनी में वॉशिंग मशीन से कपड़े धोते हुए गाना सुनने लगी और साथ ही खुद भी गुनगुनाने लगी। थोड़ी देर बाद गाना बंद हो गया लेकिन शांति देवी गुनगुना ही रही थी कि तभी अचानक उन्हें कुछ ख्याल आया और वो थोड़ा सहम कर चुप हो गयी। गाते रहिए न बहुत अच्छा गाती हैं आप ! सहसा उनके कानों में आवाज़ पड़ी तो वो इधर-उधर देखने लगी। कोई नज़र नहीं आया तो वापस अन्दर जाने लगी, तभी फिर से आवाज़ आई, अरे भाभी जी इधर देखिये ऊपर ! शांति देवी ने देखा कि पड़ोस वाली छत पर एक महिला खड़ी थी। नमस्ते भाभी जी कैसी हैं आप.. उस महिला ने पूछा, तो शांति देवी जी बदले में मुस्कुरा दी, लेकिन वो महिला जान-पहचान बढ़ाना चाहती थी इसलिए पूछने लगी, कि आपलोग कहाँ से आए हैं ? आपका नाम क्या है ? वगैरह-वगैरह और फिर बोली, आसपास की सभी हमउम्र महिलाओं ने किटी पार्टी ज्वाइन की हुई है। आज शाम को मेरे ही घर पर हमारी किटी पार्टी है, अगर आप व्यस्त नहीं हैं तो शाम को पार्टी में आ जाइए। इसी बहाने सोसाइटी की सभी महिलाओं से आपकी जान-पहचान हो जाएगी। किटी पार्टी का नाम सुनते ही शांति देवी कुछ असहज सी हो गई और सोचने लगी कि किटी पार्टी तो मेरे पति को पसंद ही नहीं है। वे कहते हैं कि तुम्हें ऐसी पार्टियों में जाना शोभा नहीं देता है। घर पर ही रहा करो।

अब पति की मर्ज़ी के बिना मैं किटी पार्टी में कैसे जा सकती हूँ। तभी पड़ोसन बोली अरे ज्यादा मत सोचिए हमारे साथ पार्टी ज्वाइन करोगी तो आपको बहुत अच्छा लगेगा। मैं आपका इंतज़ार करूंगी। उस समय पड़ोसन को मना करना शांति देवी को अच्छा नहीं लगा इसलिए एक मुस्कराहट के साथ उन्होंने स्वीकृति दे दी। जाने का दिल तो उनका भी बहुत था पार्टी में लेकिन यही सोचकर रह गई कि कहीं पतिदेव नाराज़ न हो जाए, बस यही सोचकर उन्होंने जाने का प्रोग्राम कैसिल कर दिया।

ऐसे ही कई दिन बीत गए फिर एक दिन शाम को दरवाजे की घंटी बजी तो शांति देवी ने जाकर दरवाज़ा खोला और देखा तो वही पड़ोसन दरवाज़े पर खड़ी थी। अरे आप! एक फीकी सी मुस्कान के साथ शांति देवी बोली। अरे भाभी जी मैं तो आपसे मिलने के लिए आई हूँ लेकिन मुझे आपसे शिकायत भी है। आप उस दिन किटी पार्टी में क्यों नहीं आईं? बड़े अपनेपन से पड़ोसन ने पूछा और उनके कंधे पर हाथ रखते हुए बोली सारा दिन घर पर कैद होकर भला आप कैसे रह सकती हो? अरे एक जगह पर ठहरा हुआ पानी भी बदबू मारने लगता है इसलिए जीवन के लिए गतिशीलता और परिवर्तन ज़रूरी है। क्या बात है आप बाहर भी नहीं निकलतीं? पड़ोसन का प्यार भरा व्यवहार देख कर शांति देवी की आँखें भर आईं। फिर पड़ोसन ने कहा आपने दरवाज़े खिड़कियाँ भी नहीं खोले हैं, शुद्ध हवा कहाँ से आएगी। तब शांति देवी ने कहा मेरे पतिदेव को खिड़कियाँ खोलना पसंद नहीं, तो पड़ोसन ने कहा शायद आपको आपका पार्टी में भी जाना पसंद नहीं होगा इसलिए आप उस दिन पार्टी में नहीं आईं। फिर पड़ोसन ने अपने हाथ से बनाई हुई पनीर की सब्जी शांति देवी को देते हुए कहा - ये मैंने सब्जी बनाई है ज़रा खा कर बताइए कैसी बनी है? तो शांति देवी ने कहा मुझे कुछ खाने का मन नहीं। इतना सुनकर पड़ोसन ने कहा - इसका मतलब तो आपने खाना भी नहीं खाया होगा, इतना कहकर वो उसकी रसोई में घुसते हुए बोली चलिए आज हम दोनों मिलकर रोटियाँ बनाते हैं, फिर साथ मिलकर खाएंगे।

शांति देवी को बड़ी हैरानी हो रही थी पड़ोसन को यह सब करता देख। उसी क्षण पड़ोसन ने कहा भाभी जी मेरे लिए ये



घर नया नहीं है, आपसे पहले जो भाभी जी रहती थी वो भी बहुत अच्छी थी। मैं हमेशा यहाँ आया करती थी। फिर दोनों ने मिलकर रोटियाँ बनाई और साथ मिलकर खाईं। फिर पड़ोसन ने बड़े ही अपनेपन से शांति देवी को कहा कि शाम को हम लोग बाज़ार चलते हैं फिर वहाँ से कुछ कपड़े और चादर वगैरह घर के लिए खरीद कर लाते हैं। अगर आप चाहें तो हमारे साथ चल सकती हैं। आपके पति पूछें तो मेरा नाम कह देना कि मैंने ही बोला आपको बाज़ार जाने के लिए। अब तो शांति देवी को जैसे एक सहेली मिल गई उसके सारे सुख-दुःख में साथ देने के लिए। फिर उन दोनों ने शाम में बाज़ार जाकर खूब सारी शॉपिंग की। दोनों ने मिलकर घर को खूब अच्छे से सजाया। जब शांति

देवी के पति घर आए तो वे भी सजा घर देखकर बहुत खुश हुए और इसका राज़ पूछा तो शांति देवी ने सारी बात बताई। इतना सुनकर पतिदेव ने भी सोचा चलो अब मुझे भी इसकी शिकायतों से निजाद मिल गई क्योंकि अब इसे एक अच्छी पड़ोसन मिल गई है जिससे शांति देवी को अब पहले जैसा घर काटने को नहीं दौड़ेगा और अब अच्छे से समय का सदुपयोग भी होगा। अब रामलाल और शांति देवी दोनों खुश थे, अब उन्हें किसी से कोई शिकायत नहीं थी।





रबतनसे रूइन्स, पेल्लिंग

नारी

मधु कुमारी
भांजी, श्री विपिन भास्कर,
लेखापरीक्षक



कहते हैं जिसे संजीवन जूठन है वो सबरी का
जिससे जीवन चलता है शक्ति है वो नारी का
कितना भी बड़ा दुःख आए
विचलित न होवे नारी
हर एक मुसीबत पे
नारी शक्ति है भारी ।

जबसे जनमा है जीवन
नारी ने इसे पाला है
सींचा है खून से अपने
धरती कि तरह संभाला है ।

बेटी बनकर के पिता का
सम्मान बढ़ाया इसने
दो कुल कि मर्यादा का
है लाज बचाया इसने ।

डाले जब वरमाला
नर को भी देव बना दे
बन कर के सति का रूप
अंधियारे को भी मिटा दे ।

...



दार्जिलिंग की सुहानी यात्रा



बिनोद कुमार छेत्री, लेखाकार
संग
पत्नी रबीना छेत्री

मार्च 2024 की एक ठंडी सुबह, मैंने और मेरी पत्नी ने गंगटोक से दार्जिलिंग की यात्रा पर निकलने का फैसला किया। हम गंगटोक के सियारी में एजी स्टाफ़ क्वार्टर में रहते हैं। हम दोनों की आँखों में रोमांच और उत्सुकता थी क्योंकि हमें दार्जिलिंग की खूबसूरत वादियों को देखने का बेसब्री से इंतज़ार था। हमने देवराली टैक्सी स्टैंड से एक टैक्सी ली। टैक्सी में बैठते ही नज़ारे हमारे सामने आते जा रहे थे। घुमावदार सड़कें, हरे-भरे जंगल और ठंडी हवा ने हमारे दिलों को छू लिया। हर मोड़ पर बदलता हुआ दृश्य हमारी आँखों को मंत्रमुग्ध कर रहा था। जब हम दार्जिलिंग पहुँचे, तो सबसे पहले हमने अपने होटल में चेक-इन किया और ताज़गी के लिए कुछ समय निकाला। होटल में आराम करने के बाद, हम दार्जिलिंग जू की ओर बढ़े।



वहाँ हमने कई प्रकार के जानवरों को देखा, विशेष रूप से भालू, बाघ, लाल पांडा और विभिन्न प्रकार के पक्षी। जू का शांत वातावरण और हरे-भरे बागानों ने हमारी यात्रा को खास बना दिया। चिड़ियों चहचहाहट और पेड़ों की ठंडी छाँव में घूमते हुए हमने बहुत आनंद लिया।



इसके बाद, हम दार्जिलिंग रोपवे की ओर बढ़े। रोपवे में चढ़ते ही ऊपर से देखे गए नज़ारे बेहद सुन्दर थे। जैसे ही हम ऊँचाई पर पहुँचते गए, चारों ओर फैली हुई हरियाली हमारे मन को छू गई। यह अनुभव एक जादू की तरह था और हमें ऐसा लगा कि हम बादलों के बीच से गुजर रहे हैं।

बतासिया लूप की ओर बढ़ते हुए हमें वहाँ की ठंडी हवा और हरी-भरी चादर ने घेर लिया। बतासिया लूप के नजारे पर एक छोटी सी चाय की चुस्की ने हमारे दिल को छू लिया। यहाँ से रेलवे ट्रैक का लूप और हरे-भरे पहाड़ों का मिलाजुला दृश्य देखने लायक था।



हमने सुबह की पहली सूरज की किरण देखने के लिए टाइगर हिल की यात्रा की। तड़के सुबह, जब चारो ओर अंधेरा था, हम जल्दी उठकर टाइगर हिल के लिए निकल पड़े। वहाँ पहुँचते ही, हमने सूरज की पहली किरणों का अद्भुत दृश्य देखा। हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियाँ सूरज की किरणों में सोने जैसी चमक उठीं और यह दृश्य हमारे दिल को छू गया। यह सुबह का समय बहुत खास था और हमारी यात्रा का एक अविस्मरणीय पल बन गया। घुम रेलवे स्टेशन की यात्रा भी बहुत रोमांचक रही। यहाँ की पुरानी वासना और ऐतिहासिक महत्व ने हमें पुराने जमाने की यात्रा पर ले जाकर खड़ा कर दिया। रेलवे स्टेशन की अद्भुत वास्तुकला और रंगीन इंजन हमें अतीत की कहानियाँ सुनाने लगे। महाकाल मंदिर की यात्रा ने हमारे मन को बहुत शांति दी। मंदिर की भव्यता और वहाँ की शांति और सुन्दरता का आनंद लिया। चौक बाज़ार में घूमना भी बहुत



मज़ेदार था। यहाँ के रंग-बिरंगे बाज़ार, स्थानीय हस्तशिल्प और स्वादिष्ट भोजन ने हमें दार्जिलिंग की सांस्कृतिक विविधता का अहसास कराया। यहाँ के बाज़ार में दार्जिलिंग की प्रसिद्ध चाय का आनंद लेना भी एक विशेष अनुभव था। दार्जिलिंग चाय, जिसकी हल्की मीठी और फल जैसी खुशबू थी, ने हमें चाय की शाही सत्ता का असली स्वाद चखने का मौका दिया। यह चाय, यहाँ की ठंडी जलवायु में उगाई जाती है और इसकी अद्वितीय गुणवत्ता ने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया। हमारी यात्रा का हर पल खास था और हमें दार्जिलिंग की सुन्दरता और सादगी ने पूरी तरह से मंत्रमुग्ध कर दिया। यह यात्रा न केवल हमें नए अनुभवों से समृद्ध कर गई बल्कि हमारे दिलों में हमेशा के लिए छाप छोड़ गई। यह यादगार यात्रा हमेशा हमारे दिल के करीब रहेगी।



भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पूर्वी क्षेत्र टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2024-25











माँ

सुषमा देवी
बहन, श्री विपिन भास्कर,
लेखापरीक्षक

हर रिश्ते का कोई न कोई मोल है,
लेकिन रिश्ता माँ का सबसे अनमोल है ।

इस संसार को ना देखा ना जाना,
है माँ का रिश्ता इतना पुराना ।

अपने लहू से पाला है जिसने,
छाँव में अपनी संभाला है जिसने ।

ईश्वर का रूप है ममता की छाया,
मैं हूँ भाग्यशाली जो तुम्हें मैंने पाया ।

कितने अहसान हैं मैं क्या क्या बताऊँ,
कभी सोचती हूँ इन्हें कैसे चुकाऊँ ।

इतना आशीष देना ओ माता मेरी,
मेरी साँसों की वीणा में धुन हो तेरी ।

...





चार धाम, नामची

सिक्किम से मेरा पहला परिचय



दीपा उराव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



सिक्किम के बारे में मैंने सुना जरूर था लेकिन कभी यहाँ रहने आऊंगी ये नहीं सोचा था। सिक्किम तो मेरे घूमने वाली जगहों की लिस्ट में भी शामिल नहीं था। जब मुझे पता चला कि मेरी पहली पोस्टिंग गंगटोक (सिक्किम) में मिली है तो मैं सोच में पड़ गई कि ऐसी नई जगह में कैसे एडजस्ट करूंगी। मैं झारखण्ड से हूँ तो सिक्किम का भूगोल और संस्कृति दोनों मेरे लिए नया और अलग होने वाला था। पहाड़ों में रहने का ये मेरा पहला अनुभव होने वाला था। जैसे ही मेरे घरवालों और दोस्तों को पता चला कि मैं अब गंगटोक में रहूंगी, वो लोग खुश हो गए और बोलने लगे कि मैं कितनी भाग्याशाली हूँ कि जहाँ लोग घूमने जाते हैं या घूमने जाना चाहते हैं वहाँ मैं रहने वाली हूँ। मुझे उनकी बातों से ज्यादा फर्क नहीं पड़ रहा था क्योंकि मैं गंगटोक के बारे में ना के बराबर जानती थी बस सोशल मीडिया पे दोस्तों के कुछ फोटोज देखे थे जब लोग यहाँ घूमने आए थे।

दस्तावेज़ सत्यापन के लिए मैं लिंगडिंग रोड में एक एयर.बी.एन.बी में अपने रिश्तेदारों के साथ ठहरी थी। वहाँ हमलोग तीन दिन रुकने वाले थे फिर या तो क्वार्टर या किराये का घर ले कर रहने वाले थे। दस्तावेज़ सत्यापन के बाद यह निश्चित हो गया कि हमलोग किराये का घर ले कर ही रहेंगे। लेकिन किराये का घर ढूँढना आसान नहीं था ये जानते हुए हमने एयर.बी.एन.बी में अपने ठहरने का दिन बढ़ा दिया। जैसे ही एयरबीएनबी के मालिक को पता चला कि हम किराये का घर ढूँढ रहे हैं, उन्होंने अपने एक दोस्त के घर में रहने का सुझाव दिया। वो घर हमारी अपेक्षा से थोड़ा छोटा था इसलिए हमने मना कर दिया। तो बुरा न मानते हुए उन्होंने हमारे साथ और घर देखने जाने का आग्रह किया क्योंकि हमलोग गंगटोक में नए थे तो पता ढूँढना थोड़ा मुश्किल था और तो और हमें यहाँ कि भाषा जो कि नेपाली है वो भी हमें नहीं आती थी। हमारे काफी मना करने के बाद वो माने कि हमलोग ये काम खुद कर लेंगे। ये हमारे लिए बिलकुल नया अनुभव था कि कोई इंसान अपने व्यस्त दिनचर्या के बावजूद ऐसे लोगों की मदद करने को तैयार हो गया जिनको वो बस 3 दिनों से जानता था। इस बात से हमलोग बहुत प्रभावित हुए। फिर मैंने कार्यालय ज्वाइन कर लिया और हमें



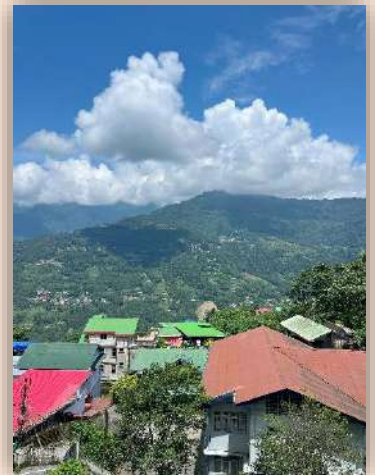
किराये का घर भी मिल गया ।

जैसा कि मुझे दक्षिण भारतीय व्यंजन खाना और पकाना दोनों बहुत पसंद है खासकर सांभर । तो सांभर बनाने के लिए मुझे करी पत्ते कि ज़रूरत थी, लेकिन मेरे घर के पास की सब्जी की दुकानों में करी पत्ते नहीं मिल रहे थे तो मैंने मिलने की उम्मीद भी छोड़ दी थी।



एक दिन मैं किसी काम से एम जी मार्ग की तरफ जा रही थी, रस्ते में एक बेंच पर मैंने सब्जी का थैला देखा जिसमें से करी पत्ते का गुच्छा बाहर निकला हुआ था । वो देख कर मैं बहुत खुश हो गई और आस पास खड़े हुए लोगों से पूछने लगी कि वो सब्जी का थैला किसका था । एक महिला सामने आकर बोली "ये झोला मेरा है, कोई दिक्कत है क्या?" । मैंने बोला "कोई दिक्कत नहीं है । बस मुझे ये पूछना है कि ये करी पत्ते आपने कहाँ से खरीदे?" । वो मुस्कुरा के सामने वाले बाज़ार की तरफ इशारा करते हुए बोली 'लाल बाज़ार' से । मैंने धन्यवाद कहा और लाल बाज़ार की तरफ बढ़ने लगी, तभी उसी महिला ने आवाज़ देकर मुझे रोक लिया और अपने करी पत्ते के गुच्छे में से आधा मेरी तरफ बढ़ाते हुए बोली "आधे आप ले लीजिए" । मैंने मना किया लेकिन उन्होंने बहुत आग्रह किया तो मैंने ले लिया । मैंने उनको कुछ पैसे देने की कोशिश की लेकिन उन्होंने पैसे लिए ही नहीं ।

इसी तरह की और बहुत सारी घटनाओं ने मुझे यहाँ अपना महसूस कराया । यहाँ के लोगों का साफ़ दिल और सबकी मदद करने की प्रकृति ने मेरा दिल जीत लिया । मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानती हूँ कि मेरा मन नहीं होने के बावजूद मेरी पहली पोस्टिंग यहाँ हुई । कल को मैं कहीं भी चली जाऊँ यहाँ के अच्छे लोग, अच्छा मौसम और अच्छी यादें हमेशा मेरे दिल में रहेंगे ।



...



शुभम शुक्ला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ज़िन्दगी का सफ़र

ज़िन्दगी का सफ़र है, रास्ते अनजान हैं,
हर मोड़ पर मिलिंगे कुछ नए इम्तिहान हैं ।
चलते रहो बेख़ौफ़ इन हवाओं के साथ,
कभी धूप, कभी छाँव, यही इसकी पहचान है ।
हर कदम पर एक नई कहानी का बयान है ॥

...



महात्मा गांधी मार्ग, गंगटोक

पेरिस ओलंपिक खेल 2024 एवं एफिल टावर के रोचक तथ्य



गौतम तमांग (सेवानिवृत्त)



आप सभी अवगत हैं कि हाल ही में ओलंपिक खेल 2024 संपन्न हो चुका है। फ्रांस देश की राजधानी पेरिस में आयोजित यह खेल का महाकुम्भ 26 जुलाई 2024 से 7 अगस्त 2024 तक बड़ी रोमांचक ढंग से सुसंपन्न हुआ। मैं यह बात दोहराना चाहूँगा कि ओलंपिक खेल का मूल उद्देश्य खेल-कूद के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय शान्ति, एकता एवं समझ को बढ़ावा देना होता है। इतिहास बताता है कि आधुनिक ओलंपिक खेल के आयोजन की शुरुआत साल 1896 में ग्रीस के एथेंस में हुई थी। हालांकि, प्रथम विश्व युद्ध के कारण 1916 में बर्लिन, जर्मनी में खेले जाने वाले ओलंपिक खेल को रद्द करना पड़ा था।

फिर साल 1940 में जापान में आयोजित होने वाला ग्रीष्मकालीन ओलंपिक और कैलिफ़ोर्निया, संयुक्त अमेरिका में होने वाला शीतकालीन ओलंपिक भी द्वितीय विश्व युद्ध के कारण रद्द हो गया था। हालांकि, वर्ष 1944 से लेकर वर्ष 2024 तक यह खेल सुचारू रूप से संपन्न हुआ है लेकिन वर्ष 2020 का ओलंपिक खेल जो जापान में हुआ था, कोविड-19 के कारण स्थगित हुआ और यह वर्ष 2021 में संपन्न हुआ था।

विषय वस्तु से आगे हाल में आयोजित ओलंपिक खेल 2024 के बारे में अवगत कराना चाहूँगा। इसी वर्ष फ्रांस

के पेरिस में खेले गई ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेल में कुल 206 देशों ने 10500 खिलाड़ियों के साथ सहभागिता ली थी जिसमें 32 विभिन्न खेलों के अंतर्गत 329 प्रतिस्पर्धाएं हुई थी। बड़े जोश, हौसला और मेहनत के साथ यह खेल संपन्न हुआ।



हर देश के प्रतिनिधियों द्वारा पदक को हासिल करने के लिए संभवतः कोशिशें की गईं। विजेताओं की तालिका में सबसे ज्यादा पदक हासिल करने वाले देशों में शामिल रहा- (1) चीन 40 स्वर्ण पदकों के साथ कुल 91 पदक (2) संयुक्त राष्ट्र अमेरिका 38 स्वर्ण पदकों के साथ कुल 124 पदक (3) जापान 20 स्वर्ण पदकों के साथ कुल 45 पदक (4) ऑस्ट्रेलिया 18 स्वर्ण पदकों के साथ कुल 53 पदक (5) फ्रांस 16 स्वर्ण पदकों के साथ कुल 63 पदक।

वैसे हमारे देश के प्रतिनिधियों ने भी काफी कोशिश की, शानदार प्रदर्शन किए और 1 रजत और 5 कांस्य के साथ कुल 6 पदक हासिल किए। भारत छः संभावित पदकों से चूक गया जिनमें से अधिकांश मामूली अंतर से हार गए क्योंकि खिलाड़ी अपनी अपनी प्रतिस्पर्धाओं में चौथे स्थान पर रहे। मैं उन तमाम विजेताओं और देश का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों को देशवासियों की ओर से बहुत बहुत बधाई देना चाहूंगा। अतीत में भी हमारे देश के खिलाड़ियों ने ओलंपिक खेल में लगातार स्वर्ण पदक हासिल किए हैं। जैसे कि भारतीय हॉकी टीम ने वर्ष 1928 से वर्ष 1980 तक लगातार देश के लिए 8 स्वर्ण पदक हासिल किए थे।

ओलंपिक खेल के विजेताओं को विजय प्रतीक के रूप में देने वाले पदक (मेडल) की प्रथा वर्ष 1904 में संत लुईस, संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित ओलंपिक खेल के दौरान शुरू हुई थी जिसमें स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक तैयार किए गए थे। हर चार वर्ष के अंतराल में आयोजित किए जाने वाले इस ओलंपिक खेल में परम्परानुसार उन पदकों में मेजबान देश के गौरव को उत्कीर्ण किया जाता है तथा उस देश की ऐतिहासिक धरोहर उक्त मेडल में झलकती है।

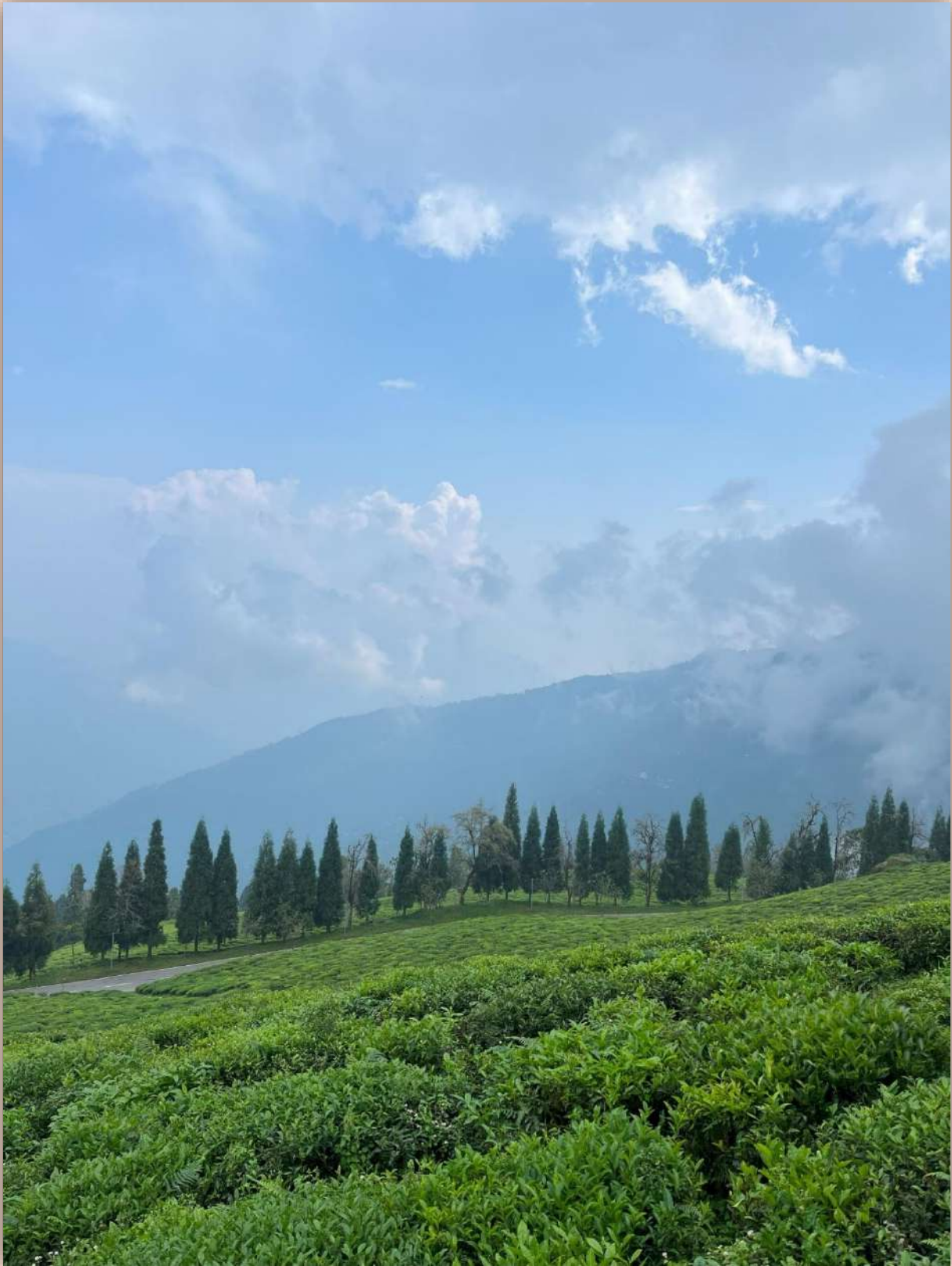
आपको ज्ञात होगा कि वर्ष 2020 में ओलंपिक खेल का आयोजन जापान के टोक्यो ने किया था और मेजबान देश ने उन तमाम पदकों को एक चुनौती के साथ तैयार किया था | उनके देश के इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट पदार्थ के उद्घरण से बने धातुओं को प्रयोग में लाया गया था जिससे स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक तैयार किए गए थे |

तदनुसार, फ्रांस के पेरिस में आयोजित ओलंपिक खेल 2024 में मेजबान फ्रांस देश ने अपनी कलाकारिता दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी | साथ ही अपने देश की विश्वप्रसिद्ध राष्ट्रीय धरोहर एफिल टावर को एक स्मारिका के रूप में मेडल पर दर्शाया | पेरिस ओलंपिक 2024 के आयोजन के समय एफिल टावर संरक्षण समिति ने अनुमोदन कर दिया था कि उस लोहे को हर मेडल पर निशानी के तहत शामिल किया जाएगा |

दरअसल, एफिल टावर 1889 में बनी थी और इसके बाद उसमें जितनी भी खराबियाँ आई उसकी नवीनीकरण की गई | उसी दौरान निकाले गए टावर के लोहे को संरक्षित रखा गया था और उसी लोहे को प्रयोग में लाया गया था |



हर मेडल के बीच में 18 ग्राम लोहे की पत्ती को षटकोण अकार में लगाया गया जो फ्रांस देश की अपनी भौगोलिक आकृति को दर्शाता है | पेरिस ओलंपिक विजेताओं को प्राप्त मेडल से पेरिस की याद हमेशा बनी रहेगी |



टेमी चाय बागान, नामची

उसका बचपन



हीरेश कुमार तिवारी
भाई, श्री धीरेश कुमार तिवारी,
डाटा एंट्री ऑपरेटर

हाथों में लगी कालिख में नसीब छुपा रहा था |
वो किसी की गाली और गुस्से में भी मुस्कुरा रहा था ||
वो बेच रहा था अपने बचपन को कुछ पैसों के लिए |
वो दुनिया को अपनी ज़िन्दगी की किशतें चुका रहा था ||



जिंदगी



उसकी आँखों की बेबसी देख मन रो रहा है |
कोई इन हालातों में भी सड़क पर सो रहा है ||
मौत के डर से जब हम छुपे हैं अपने महलों में |
तब वो अपनी ज़िन्दगी सड़क पे बिछाए सो रहा है ||

...



बुद्ध पार्क , रावंगला

कोलकाता का स्ट्रीट फूड : एक स्वादिष्ट सफ़र



कुंतल कुमार माजी
(लेखाकार)

कोलकाता जिसे 'सिटी ऑफ़ जॉय' के नाम से भी जाना जाता है, अपने अद्वितीय स्ट्रीट फूड के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के व्यंजन केवल खाने-पीने के लिए नहीं होते, बल्कि यह शहर की संस्कृति और इतिहास का हिस्सा हैं। कोलकाता की सड़कों पर मिलने वाले खाने की विविधता और स्वाद हर किसी का दिल जीत लेती है। विभिन्न प्रकार के भोजन, विभिन्न स्वादों और विभिन्न महत्वों का आनंद लेने के लिए कोलकाता सबसे अच्छी जगहों में से एक है।

कोलकाता के स्ट्रीट फूड की बात हो और फुचका का ज़िक्र न हो, यह संभव नहीं। फुचका, जिसे अन्य स्थानों पर गोलगप्पा या पानीपूरी के नाम से जाना जाता है, का स्वाद कोलकाता में अलग ही होता है। मेरे स्थानीय इलाके, टांगरा में, जहाँ फुचका वाले चुरमुर और फुचका दोनों देते हैं और साथ ही अलग-अलग फ्लेवर वाला पानी भी रखते हैं, जैसे इमली का पानी, नींबू का पानी और मीठा पानी। कुल मिलाकर यह मेरी पसंदीदा व्यंजन में से एक है।



काठी रोल भी कोलकाता की एक और पहचान है। पराठे में लपेटा हुआ, अन्दर में भरा हुआ तंदूरी चिकन, पनीर या अंडा और उस पर मसालेदार चटनी, यह सब मिलकर काठी रोल को बेहद स्वादिष्ट बनाता है। काठी रोल खाने के लिए मेरी पसंदीदा जगहों में से एक न्यू मार्किट इलाके में स्थित निज़ाम्स है। दुकान में जो खुशबू है और यहाँ का स्वाद वाकई लाजवाब है।



कोलकाता के स्ट्रीट फूड की मिठास भी कम नहीं है। रसगुल्ला, सन्देश और मिष्टी दोई यहाँ की मशहूर मिठाइयाँ हैं।

रसगुल्ला का मुलायम और रस भरा स्वाद, सन्देश का नाजुक और मीठा स्वाद और मिष्टी

दोई की क्रीमी मिठास, यह सभी कोलकाता के स्ट्रीट फूड का अभिन्न हिस्सा हैं। भले ही कोलकाता को हर कोई रसगुल्ला के लिए जानता है। लेकिन मुझे खीर कदम पसंद है जहाँ मीठे के अन्दर एक और मिठाई होती है और मलाई चमचम एक और मिठाई है जो मेरी पसंदीदा है और मैं दूसरों को भी इसे आजमाने की सलाह देता हूँ।



कोलकाता का स्ट्रीट फूड बिना फिश फ्राई के अधूरा है। ताज़े मछली के टुकड़ों को मसालों में मैरिनेट करके डीप फ्राई किया जाता है। इसे गरमा-गरम परोसने पर इसका स्वाद अद्वितीय होता है और इसके साथ कंजूसी भी जरूरी है। फिश फ्राई और मितरा कैफ़े दो अविभाज्य चीज हैं। कोलकाता में रहने के दौरान मैं और मेरे दोस्त मितरा कैफ़े जाया करते थे और वहाँ फिश फ्राई के साथ-साथ फिश कटलेट भी खाते थे। इनका स्वाद काफी शानदार होता था।

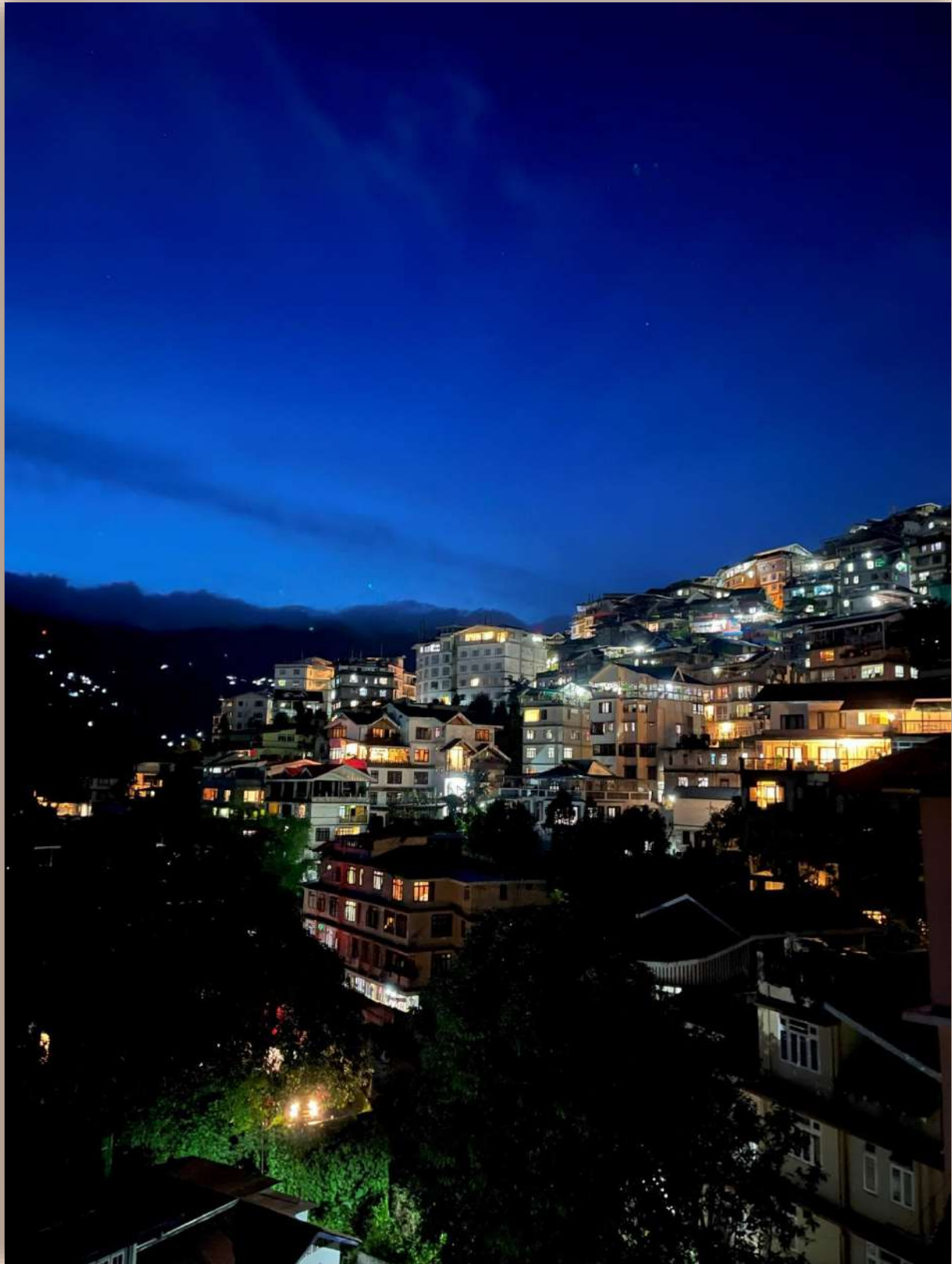
कोलकाता का स्ट्रीट फूड फुचका, काठी रोल, मिठाई आदि तक ही सीमित नहीं है, इसके अलग-अलग स्वाद और विविधताएँ हैं। उदहारण के लिए "देबिल"- जिसके मूल में अंडा होता है और मसले हुए आलू और ब्रेड क्रंच कोटिंग के साथ लेपित होता है, गर्म तेल में तला हुआ सलाद के साथ परोसा गया। इसके अलावा आलू चॉप और मुरी और थोड़े से सरसों के तेल और मिर्च के साथ यह नाश्ते के रूप में बंगालियों का पसंदीदा बन जाता है। इसी तरह फ़ास्ट फूड की अनगिनत किस्में पूरे कोलकाता में मौजूद हैं।



कोलकाता का स्ट्रीट फूड न केवल पेट भरने का माध्यम है, बल्कि यह शहर की धड़कनों का हिस्सा है। चाहे वह फुचका हो, काठी रोल या मिष्टी, हर व्यंजन अपने आप में एक कहानी कहता है। कोलकाता का स्ट्रीट फूड हमारे समाज के विभिन्न वर्गों की ज़रूरतों को पूरा करता है क्योंकि वे बहुत सस्ते, स्वादिष्ट और सभी के लिए आसानी से उपलब्ध हैं। कोलकाता में यदि आप सियालदाह जाते हैं तो आपको स्ट्रीट फूड चखने को मिलेंगे। कोलकाता में ऑफिस पाड़ा के लिए भी यही स्थिति है जो बीबीडी बाग में है, डैकर्स लेन इसके लिए प्रसिद्ध है। संक्षेप में शहर के हर हिस्से में जनसांख्यिकी या लोग बदल सकते हैं लेकिन केवल एक चीज जो वही रहती है वह है स्वादिष्ट स्ट्रीट फूड।

वर्तमान स्थिति में जहाँ लोग रंग के आधार पर विभाजित हैं, जाति के आधार पर विभाजित हैं, सीमाओं के आधार पर विभाजित हैं, देशों या राज्य के आधार पर विभाजित हैं, दिन के अंत में हम सभी भोजन के आधार पर एकजुट होते हैं। इस आलोक में, हमें मानवता के बीच एकता और सम्बन्ध को बढ़ावा देने में भोजन की भूमिका का जश्न मनाना और उसका सम्मान करना चाहिए।

...



गंगटोक, सिक्किम



मौसुमी भौमिक
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अच्छी हूँ

जब पूछते हो "कैसी हो?",
कहती हूँ "अच्छी हूँ"।
क्योंकि यही तो सुनना चाहते हो।
तुम तो सुनना ही नहीं चाहते हो
क्यूँ मेरा शारीर ठीक नहीं है।
मैं ठीक हूँ सुनके चले जाने के लिए जब पूछते हो,
तब तुम्हें अपने अवसाद के बारे में क्यूँ बताऊँ ?
क्यूँ बताऊँ मेरी बीमारी, मेरे दर्द के बारे में?



मैंने जो झूठ बोला उसके पीछे
एक उम्मीद भी है, एक आशा भी है-
वास्तव में मैं अच्छी रहूँ।
काश मेरी बात सच हो जाए!

...



चाय का फूल

सिक्किम में चाय की खेती : परंपरा और प्रकृति का मिश्रण



मंतोष कुमार सिंह
(लेखाकार/अभिलेख)

पूर्वोत्तर भारत के एक शांत राज्य सिक्किम में चाय की खेती इस बात का एक शानदार उदाहरण है कि पारंपरिक प्रथाएँ प्रकृति के साथ कैसे तालमेल बिठा सकती हैं। 1200 और 2200 मीटर के बीच उच्च ऊँचाई पर स्थित, सिक्किम के चाय बागानों को क्षेत्र की ठंडी जलवायु, प्रचुर वर्षा और समृद्ध मिट्टी से लाभ होता है, जो विशिष्ट स्वाद और सुगंध के साथ चाय का उत्पादन करते हैं।

सिक्किम जैविक खेती के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के कारण चाय की दुनिया में अलग पहचान रखता है। 2003 में भारत का पहला पूर्ण जैविक राज्य बनने के बाद से, सिक्किम ने सिंथेटिक रसायनों से परहेज और जैव विविधता को बढ़ावा देकर अपने चाय उद्योग में इस स्थिति को बराबर रखा है। यह दृष्टिकोण न केवल पर्यावरण को संरक्षित करता है बल्कि इसकी चाय की गुणवत्ता को भी बढ़ाता है, जिससे इसकी घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अत्यधिक मांग की जाती है। सिक्किम में चाय उद्योग एक आर्थिक गतिविधि से कहीं अधिक है, यह एक सांस्कृतिक संपत्ति है। यह स्थानीय आजीविका का समर्थन करता है और चाय पर्यटन को बढ़ावा देता है, जिससे आगंतुकों को राज्य के लुभावने परिदृश्य और समृद्ध विरासत का अनुभव मिलता है। जैसे-जैसे उद्योग जलवायु परिवर्तन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, सिक्किम चाय परंपरा, स्थिरता और अद्वितीय क्षेत्रीय चरित्र के सफल मिश्रण का प्रतीक बनी हुई है।



...

हिन्दी दिवस 2024







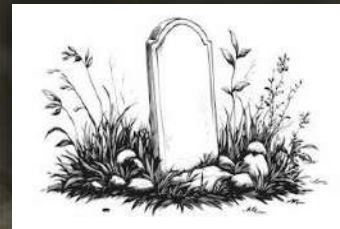
अकेले आए थे अकेले ही चले जाएंगे

श्रीकंती देवी
(माता, मंतोष कुमार सिंह)



इस ज़िन्दगी के सफ़र में
अकेले आए थे अकेले ही चले जाएंगे
साथ जितने रिश्ते जुड़ेंगे उनको निभाएंगे
कुछ सीखेंगे कुछ सिखाएंगे
फिर सब भूल कर
अकेले आए थे अकेले ही चले जाएंगे
कुछ बटोरेंगे कुछ लुटाएंगे
फिर सब यहीं छोड़कर
अकेले आए थे अकेले ही चले जाएंगे
कुछ जंग जीतेंगे कुछ जंग हार जाएंगे
कुछ दुनिया में देखा कुछ दुनिया को दिखाएंगे
अकेले आए थे अकेले ही चले जाएंगे
कुछ बनाएंगे कुछ बिगाड़ेंगे
कुछ सजाएंगे कुछ सवारेंगे
फिर सब समय के हाथों में छोड़कर
अकेले आए थे अकेले ही चले जाएंगे
अकेले आए थे अकेले ही चले जाएंगे ।

...





बंझाकरी जलप्रपात



मोहित
(लेखाकार)

अनजान निगाहें

चलती ट्रेन में उस बच्चे की एकटक बाहर देखती निगाहें,
अनजान सी दुनिया को एक उम्मीद सी देखती निगाहें,
अपनी उम्मीद भरी निगाहों से देखता वह स्वछंद सी इस दुनिया को,
अलग-अलग कल्पनाओं और विचारों को देखती उसकी निगाहें ।

आकाश में उड़ने की उसकी वो निर्दोष कल्पनाएँ,
शहरों की चका-चौध को उसकी वो निर्दोष कल्पनाएँ,
इस भीड़ भरी दुनिया को देखकर उसकी वो अपेक्षाएँ,
भविष्य की निर्दोष आशाएँ व विचारों को प्रकट करती उसकी निगाहें ।

...



अतिरिक्त उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का दौरा







रहस्य

सर्वोत्तम कुमार गुप्ता
सहायक पर्यवेक्षक



हम जिस चीज का प्रतिरोध करते हैं, उसे अपनी ओर आकर्षित करते हैं क्योंकि हम प्रबल भावना से उस पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करते हैं। किसी चीज को बदलने के लिए बस अपने मन के भीतर जाना चाहिए और विचारों तथा भावनाओं से एक नया सुखद संकेत भेजना चाहिए। हम नकारात्मक चीजों पर ध्यान केन्द्रित करके दुनिया की मदद नहीं कर सकते हैं। जब हम दुनिया में होने वाली नकारात्मक घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो न सिर्फ उन्हें बढ़ाते हैं, बल्कि अपनी ज़िन्दगी में आने वाली नकारात्मक चीजों को भी बढ़ा लेते हैं।

दुनिया की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय विश्वास, प्रेम, प्रचुरता, शिक्षा और शांति पर ध्यान लगाना चाहिए। दुनिया में मौजूद अच्छी चीजें कभी खत्म नहीं होंगी क्योंकि यहाँ सबके लिए पर्याप्त से ज्यादा है। जीवन प्रचुर और समृद्ध होना चाहिए। हम सब के अन्दर अपने विचारों और अनुभवों के माध्यम से असीमित आपूर्ति का दोहन करने और अपने सपने साकार करने का सामर्थ्य है। दुनिया की हर चीज की तारीफ़ करनी चाहिए और आशीष देना चाहिए। इस तरह हम नकारात्मक और वैमनस्य को खत्म कर सकते हैं तथा दुनिया की जो सबसे ऊँची चीज है, उस तक प्रेम पहुँचा सकते हैं।

...



बक्थांग झरना

अच्छाई और बुराई

अनुपमा गुप्ता
(पुत्री, एस.के.गुप्ता)
सहायक पर्यवेक्षक

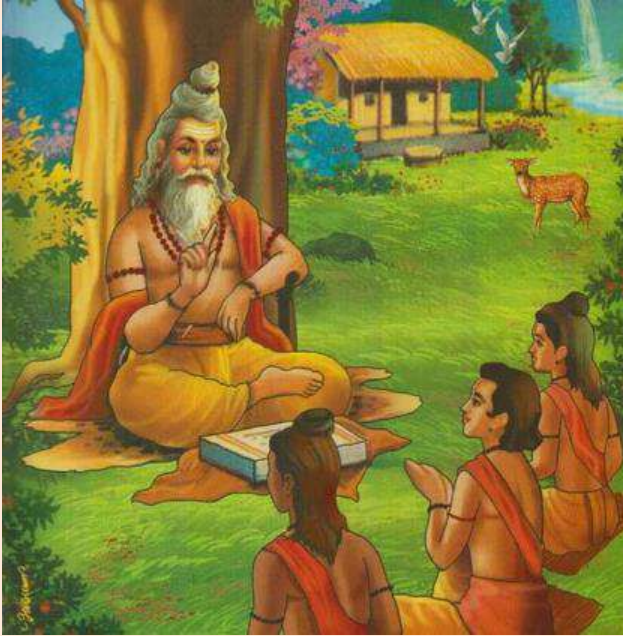
एक महात्मा ने एक दीवार पर बड़ा सा सफ़ेद कागज़ लगाया और मार्कर से उस पर एक 'काला डॉट' लगा दिया, फिर सब लोगों से पूछा कि तुम्हें क्या दिख रहा है? सब लोग बोले 'काला डॉट', तब महात्मा बोले - कमाल है ! इतना बड़ा सादा कागज़ नज़र नहीं आ रहा और छोटा सा 'काला डॉट' नज़र आ गया | यही हाल आज कल सभी का है, उन्हें किसी व्यक्ति की सारी ज़िन्दगी की अच्छाई नज़र नहीं आती है, मगर उसकी एक छोटी सी बुराई तुरंत नज़र आ जाती है |

...

गुरु और शिष्य

अनुपमा गुप्ता
(पुत्री, एस.के.गुप्ता)
सहायक पर्यवेक्षक

एक बार की बात है, एक आश्रम में तीन शिष्य रहते थे। तीनों ने कड़ी मेहनत से अपनी शिक्षा सम्पूर्ण की। तत्पश्चात तीनों शिष्य गुरुदेव के पास गए और बोले, गुरुदेव अब हमारी शिक्षा सम्पूर्ण हो गई है, अब गुरु दक्षिणा देने का समय आ गया है। गुरुदेव मुस्कुराये और बोले, यदि तुम सभी मुझे दक्षिणा देना ही चाहते हो, तो कल मुझे एक थैला सूखे पत्ते लाकर दे दो। तीनों शिष्य मुस्कुराये और उन्होंने सोचा सूखी पत्ती लाना कौन सी बड़ी बात है।



अगली सुबह तीनों शिष्य पास ही के जंगल में दक्षिणा हेतु सूखे पत्ते एकत्रित करने के लिए गए, परन्तु उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जंगल में सिर्फ एक मुट्ठी ही सूखे पत्ते बचे थे। यह देखकर वे तीनों बहुत परेशान हो गए, उन्होंने सोचा कि अब गुरुदेव को कैसे दक्षिणा देंगे!

तभी सामने से एक किसान आता दिखाई दिया, जिसने एक थैले में ढेर सारे सूखे पत्ते लिए हुए थे। उन्होंने किसान से आग्रह किया कि भाई हमें भी थोड़े सूखे पत्ते दे दो, हमें इसकी अत्यंत आवश्यकता है, किसान ने कहा- यह सूखे पत्ते मैं अपने जीवन यापन तथा भोजन पकाने के लिए ले जा रहा हूँ, मैं यह आपको नहीं दे सकता। परन्तु हाँ, पास के गाँव में एक सेठ जी रहते हैं उनके पास सूखे पत्तों से दोने बनाने का कारखाना है, शायद वो आपको सूखे पत्ते दे सकें।

वे तीनों सेठ जी के पास गए और उनसे सूखे पत्ते देने के लिए आग्रह किया परन्तु सेठ जी ने कहा कि मैं आपको सूखे पत्ते नहीं दे सकता क्योंकि इनकी मुझे आपसे अधिक आवश्यकता है, मैं इन सूखे पत्तों से अपना कारोबार चलाता हूँ, मुझे क्षमा करें। वे तीनों शिष्य अत्यंत परेशान हो गए, उन्होंने बहुत लोगों से पूछा तो पता चला कि पास में ही एक बूढ़ी दादी रहती है, वह सूखे पत्ते एकत्रित करती है। हो सकता है उनके पास कुछ सूखे पत्ते मिल जाएं। तीनों बूढ़ी दादी के पास गए और उनसे सूखे पत्ते देने का आग्रह किया, परन्तु बूढ़ी दादी उन सूखे पत्तों से औषधियाँ बनाया करती थी, इसलिए उन्होंने भी मना कर दिया। अब तीनों छात्र निराश होकर आश्रम लौट आए और दुखी मन से गुरुदेव को सारी बात बताई कि वे उनकी दक्षिणा लाने में असमर्थ रहे। तब गुरुदेव ने कहा – मेरे बच्चों मुझे दक्षिणा की अभिलाषा नहीं है, मैं तो तुम्हें बताना चाहता था कि इस दुनिया में किसी भी चीज को छोटा नहीं समझना चाहिए। छोटी से छोटी चीज का भी अपना महत्व है, अपना मूल्य है, अब शिष्यों को यह पता चल गया था कि जिन चीजों को हम बहुत छोटा समझते हैं, वास्तव में उनका भी अपना एक स्थान होता है।

दिल्ली की सड़कों पर थाली भर भोजन



सुश्री चंचल

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक (प्रशासन)

पुरानी दिल्ली की गलियों से होकर जामा मस्जिद की ओर जाने वाले रस्ते में, कोयलों के टुकड़ों पर भुने हुए चिकन पर उड़ेले गए पिघले हुए मक्खन की महक हवा में व्याप्त होती है।



रसदार शाही टुकड़ा मिठाइयों के कद्रदानों के लिए एक मनपसंद व्यंजन है और चांदनी चौक की चाट अद्वितीय पौष्टिकता प्रदान करती है। उत्तर पूर्वी दिल्ली के मजनु का टीला का लाफिंग एक अधिगृहित स्वाद वाला व्यंजन है, जिसको दोस्तों के समूह के साथ ही खाने में मज़ा आता है। दिल्ली के अंदरूनी हिस्सों की घुमावदार सड़कों की तरह, यहाँ के भोजन का भी अपना आकर्षण है – सस्ता, विविधता से भरपूर और मुंह में पानी लाने वाला।

दिल्ली सदियों से सत्ता का केंद्र और साथ ही संस्कृतियों के आदान-प्रदान का भी केंद्र रही है। यह शहरों का शहर है, जिसे लोग हमारे प्राचीन महाकाव्यों के समय का मानते हैं। यहाँ तोमरों के बाद चौहानों ने शासन किया। लाल कोट, जिसे बाद में पृथ्वी राज चौहान का किला राय पिथौरा कहा जाता था, प्रारंभिक मध्यकाल में शासन का केंद्र था। सल्तनत राजवंशों के आने के साथ, महरौली, सिरी, तुगलकाबाद, जहाँपनाह, पुराना किला और फ़िरोजाबाद जैसे शहरी केंद्र स्थापित हुए। मुगलों का शाहजहानाबाद अभी भी शहर के सबसे जीवंत स्थानों में से एक है, और लुटियंस की नई दिल्ली औपनिवेशिक वास्तुकला की विरासत को संरक्षित करती है। आज़ादी के बाद, यह फिर से दिल्ली ही थी जो नए भारत राष्ट्र की राजधानी बनी। आज अगर कोई इस शहर की सड़कों पर खड़ा होता है तो लगता है मानो युगों के एक मोड़ पर खड़ा है।

जब विमान कुतुब के ऊपर से उड़ान भरते हैं, तो हम, इतिहास के सार में स्थित अतिव्यापी सदियों के साक्षी बन, आश्चर्यचकित रह जाते हैं।



दिल्ली का मिश्रित व्यंजन हमेशा से इसकी समृद्ध विरासत का हिस्सा है। इसके इतिहास की तरह ही, यहाँ का भोजन भी संस्कृतियों के आदान प्रदान का साक्षी है। शहर में आने वाले लोगों के साथ, उनकी भोजन संबंधी प्रथाएँ भी साथ आईं। अपनी स्थानीय पाक शैलियों के माध्यम से, उन्होंने अपने मूल स्थानों के साथ संबंधों को बनाए रखने की कोशिश की और आज ये व्यंजन दिल्ली की सड़कों पर फल-फूल रहे हैं। दूसरी दिलचस्प खाद्य संस्कृति शहर के कॉलेजों के विद्यार्थियों की बढ़ती माँगों से उत्पन्न हुई है, जो सड़क के किनारे दुकानों पर भोजन और चाय के कप का आनंद लेते दिखाई देते हैं। वातानुकूलित रेस्तरां में जो परोसा जाता है, उससे कहीं अधिक, दिल्ली के स्ट्रीट फूड अथवा गली कूचों के व्यंजनों का स्वाद पूरे देश में जाना जाता है। यह स्ट्रीट फूड ही है जो, अनेक लोगों को कम दरों पर आवश्यक दैनिक पोषण प्रदान करते हुए, विक्रेताओं के परिवारों का भी भरण-पोषण करता है।

दिल्ली के इस भोजन सफ़र का आरंभ यमुना-पुरानी दिल्ली के समीप बने प्राचीन शहर शाहजहाँनाबाद से शुरू करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में, बादशाह शाहजहाँ के निजी चिकित्सक की कहानी ध्यान देने योग्य है, जो यमुना के पानी से परेशान रहते थे। प्राचीन शहर के निर्माण के बाद, चिकित्सक ने सम्राट को चेतावनी दी कि जो कोई भी इस नदी के पानी का सेवन करेगा, वह अंततः बीमार हो जाएगा। इसके समाधान के रूप में, चिकित्सक ने लोगों को मसालेदार भोजन और घी खाने की हिदायत दी। मांसाहारियों ने अपने गोشت के साथ इस चीज़ों का इस्तेमाल किया, जबकि शाकाहारियों ने अपनी चाट को मसालेदार बना दिया। जो लोग घी नहीं खरीद सकते थे, उन्होंने निहारी तैयार करना शुरू कर दिया, जिसमें मांस को घंटों तक अपने ही वसा में पकने के लिए छोड़ दिया जाता है। आज दिल्ली के स्ट्रीट फूड में चटपटी मसालेदार चाट, और घी में सराबोर गोشت सबसे ज्यादा परोसा जाता है। सबसे अच्छी निहारी जामा मस्जिद के पास शबराती निहारी वाले के यहाँ परोसी जाती है।

निहारी के साथ, खमीर के साथ मिश्रित आटे से बनी हुई खमीरी रोटी परोसना आवश्यक है। आटा गूंधने की यह शैली मध्ययुगीन काल में मध्य एशिया के लोगों के साथ भारत आई, और आज खमीरी रोटी, विशेष रूप से मुलायम होने के लिए जानी जाती है। अलग-अलग अनुपात में आटा, दूध, घी और चीनी मिलाकर हमें शीरमाल, बाकरखानी और कुलचे जैसी एक दूसरी श्रेणी की रोटियाँ मिलती हैं। खमीरी रोटी से भिन्न, ये गोشت अथवा अन्य खाद्य संगत के बिना ही पसंद की जाती हैं।





परांठे भी अपने आप में एक स्वादिष्ट व्यंजन हैं, फिर भी परांठे-वाली गली में, परांठे के स्वाद को और बढ़ाने के लिए इसे हमेशा कद्दू की सब्जी के साथ ही परोसा जाता है। चालीस से भी अधिक, विभिन्न प्रकार के परांठों को परोसते हुए, यह गली 1947 के पहले भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की कई बैठकों की गवाह बन चुकी है। इन गहन राजनीतिक बैठकों के बाद, देसी घी में तले परांठे सुयोग्य जलपान के रूप में कार्य करते थे।

परांठे-वाली गली के आसपास, धुंधली सफ़ेद दौलत-की-चाट को सर्दियों में अवश्य खाना चाहिए।



चेन है। लेकिन, चाँदनी चौक में चर्च मिशन रोड पर उनकी सबसे पहली रबड़ी फ़ालूदा की दुकान अब भी सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली और सर्वाधिक विदित है।

चिलचिलाती गर्मियों के दौरान एक और लोकप्रिय व्यंजन है कुरेमल मोहनलाल कुल्फ़ीवाले की भरवाँ फल कुल्फ़ी। लगभग सौ साल पुरानी चावड़ी बाजार की इस कुल्फ़ी

आलू चाट से लेकर राज कचौरी चाट और दही भल्ला चाट तक, चाँदनी चौक के अन्य चटपटे व्यंजनों से बिलकुल भिन्न, दौलत-की-चाट मीठी होती है। यह शीतकालीन स्वादिष्ट खाद्य है, और इसे बनाने के लिए मीठे दूध को रात भर बाहर खुले में रखा जाता है ताकि उसमें ओस की बूंदें पड़ें। किंवदंतियों के अनुसार, यह विशेष रूप से चाँदनी रात में ही तैयार किया जाता है। ग्रीष्मकालीन व्यंजनों में ठंडा रबड़ी फ़ालूदा शामिल है, जो ज्ञानी-दी-हट्टी में परोसा जाता है। ज्ञानी गुरुचरण सिंह ने 1950 के दशक में अपनी मिठाई की दुकान स्थापित की थी और आज दिल्ली में ज्ञानीज़ एक प्रसिद्ध आइसक्रीम



की दुकान में कई तरह की अद्वितीय भरवाँ कुल्फ़ियाँ बिकती हैं, जैसे जामुन कुल्फ़ी, आम पन्ना कुल्फ़ी, खजूर कुल्फ़ी और न जाने क्या-क्या। ये वास्तव में असली फ़ल हैं, जिनमें उनके गुदे से बनी कुल्फ़ी भरी और जमाई जाती है।

इनके अलावा, प्राचीन शहर के भोजन के स्वादों और सुगंधों को यहाँ के खोमचे-वालों ने अपने कंधों पर संभाला हुआ है। अपनी टोकरी में, वे इतिहास का स्वाद लिए फिरते हैं और इस विरासत को सभी के लिए सुलभ बनाते हैं। उनके चाट, टिक्की और अन्य खाद्य पदार्थ शहर के मिले-जुले अतीत की यादों को सजीवतापूर्वक जीवंत रखते हैं।

पुरानी दिल्ली के हमारे खोमचे-वालों से विदा लेते हुए, आइए हम उस क्षेत्र की ओर रुख करें जहाँ दिल्ली विश्वविद्यालय का उत्तरी परिसर स्थित है। भोजन की प्रचुरता यहाँ की सड़कों की शोभा बढ़ाती है। हनी चिली पोटेटो (शहद और मिर्च वाले आलू) से लेकर हक्का नूडल्स, अमेरिकन चौप्सी और स्प्रिंग रोल्स से लेकर चीज़ मैगी तक, यहाँ कोई भी, किफ़ायती बजट में, भोजन कर सकता है। गरम चाय के कप विद्यार्थियों के लिए उनके कॉलेज के ठीक बाहर इंतजार करते हैं। दोपहर के भोजन के लिए पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट के पास मसालेदार चिली चिकन की प्लेट, और इसके बाद ओरियो शेक का पूरा गिलास पर्याप्त होता है। प्रायः पैसे की कड़की झेलने वाले और भूख से व्याकुल, उत्तरी परिसर के विद्यार्थियों के लिए स्ट्रीट फूड एक तारणहार के सामान होता है। विद्यार्थियों की मांगों को पूरा करने वाली छोटी दुकानें, स्वयं को पुरानी दिल्ली की सड़कों पर प्राचीन विधियों से बने भोजन तक सीमित नहीं रखती हैं। ये व्यंजनों की एक नई पच्चीकारी हैं, जहाँ सर्वश्रेष्ठ भारतीय शैली का "अंतर्राष्ट्रीय भोजन" मिल सकता है – प्रचुर मात्रा में टमाटर और सोया सॉस के साथ बना फ्राइड राईस और नूडल्स, मीठी मकई के साथ सफ़ेद सॉस वाला पास्ता - विद्यार्थियों को, सस्ते दामों में, 'देसी' स्वाद वाले विदेशी व्यंजनों का आनंद देते हैं। कई खाद्य पदार्थों के लिए प्रसिद्ध, मजनू-का-टीला के तिब्बती शरणार्थी क्षेत्र की घुमावदार सड़कों पर मोमो और लाफ़िंग मिलते हैं। लाफ़िंग एक अनूठे रूप से स्वादिष्ट फीका पीला और चौड़े नूडल जैसा तिब्बती पकवान है जो सूप के साथ या बिना सूप के खाया जा सकता है। इसमें लहसुन की चटनी और मिर्च को अपनी रुचि के अनुसार मिलाया जा सकता है।



हमारे सीमित दिल्ली स्ट्रीट फूड के सफ़र का अंतिम पड़ाव जनपथ और कनॉट प्लेस अथवा राजीव चौक है। अन्य दो क्षेत्रों से अलग, इसमें मुख्य सरकारी कार्यालय हैं और दिन के किसी भी समय पर, यहाँ लोगों को अपने औपचारिक वस्त्रों में आते-जाते देखा जा सकता है। महंगे रेस्तरां और कैफ़े होने के बावजूद, यहाँ का स्ट्रीट फूड अपनी जगह बनाए हुए है। अपनी साइकिलों के कैरियरों में अपनी दुनिया समेटे, समोसे वाले, चटनी और सब्जी के साथ, दोनों छोटे और बड़े समोसे बेचते हैं। उनके पास कचौड़ियाँ भी होती हैं, और वे कर्मचारियों को राहत देने वाले इन व्यंजनों को बेचने हेतु, पहले से निर्धारित समय पर यहाँ के विभिन्न कार्यालय भवनों में जाते हैं। इनमें से कई विक्रेता अपने साथ प्रसिद्ध राम-लड्डू की टोकरियाँ भी रखते हैं। ये पुदीने की चटनी और कसी हुई मूली के साथ परोसे जाने वाले पीली दाल के गोले होते हैं। राम-लड्डू की दूसरी किस्म अनार के दानों और इमली से बना छोटा गोला है, जिसे समान रूप से हर कोई पसंद करता है।



सिंधिया भवन के पास, भोगल छोले भटूरे में सुबह दस से दोपहर तीन बजे तक, कुलचे, छोले भटूरे और छोले चावल मिलते हैं। ऊपर से कोप्रे पड़े हुए काबुली चने का मसालेदार स्वाद बहुत ही अनोखा होता है। यदि कोई ताजे फलों के चाट की तलाश में है, तो उसे खड़क सिंह मार्ग पर पप्पू चाट भंडार पर जाना चाहिए। छोटे टुकड़ों में कटे ताजे फलों को विक्रेता द्वारा तैयार किए गए विशेष चाट मसाले के साथ मिलाकर परोसा जाता है।



थोड़ा आगे, राष्ट्रपति भवन की ओर, पांडेय पान शॉप है जिसे आज़ादी के बाद से भारत के राष्ट्रपतियों को पान परोसने की प्रसिद्धि प्राप्त है। यहाँ पर लोगों को सूखे मेवों, गुलाब की पंखुड़ियों, जड़ी-बूटियों, बेरी, और यहाँ तक कि चॉकलेट से भरे पान की वृहत विविधता मिलती है। ग्रीष्मकाल में लोगों को आम के टुकड़ों से भरे विशेष मौसमी पान भी मिल सकते हैं। ये चमकदार कागजों में लिपटे होते हैं और छोटी डिब्बियों में परोसे जाते हैं।

वह शहर जो कभी मन बहलाने में विफल नहीं होता, और जिस शहर ने हजारों वर्षों के इतिहास को अपने दिल में दबाए रखा है, वह है दिल्ली। यह एक ऐसा शहर है जो सभी का है और इसका स्ट्रीट फूड विशेष रूप से इस ख्याति को बरकरार रखता है। दिल्ली के खाने का सफ़र बहुत लंबा है और शायद इसे पूर्ण रूप से जानने के लिए कई पुस्तकों के लिखे जाने की आवश्यकता होगी। यह निबंध अपने विषय-क्षेत्र में सीमित है, लेकिन यह आशा की जाती है कि यह पाठकों को कुछ समय के लिए, स्वादों का आनंद लेने हेतु, दिल्ली की सड़कों पर बाहर निकलने के लिए उत्साहित और प्रेरित करेगा।

...

स्त्री

मधु कुमारी

भांजी, श्री विपिन भास्कर,
लेखापरीक्षक



सीता के सतीत्व ने
न जलने दिया सीता को
फिर सावित्री के तप ने
हरा दिया मृत्यु को ।

बच्चों पर विपदा आए तो
काली का रूप बने माँ
देवत्व भी हारा जिससे
उनका भी अंत करे माँ ।

पल भर न ये डरी
एक पल ना ये झुकी
दुःख भी हार के इस से
हो जाता है दुखी ।

पावन गंगा, लक्ष्मी, दुर्गा
कितने ही इसके हैं अवतार
लेकिन समाज के ठेकेदार
करते हैं इसे अब भी लाचार ।

अगर प्यार करो बेटी
बहन और साथ चले
तो शक्ति है
आदर्श गुरु सा ज्ञान दे
जीवन को स्वर्ग बनाती है ।

...



रंका मठ

आशा का भिखारी



कृष्ण कुमार मीणा
लेखापरीक्षक

नमस्ते सभी को ।

आज कई दिनों बाद वापस आया हूँ इन गलियारों में, क्या करें जी समय का आभाव है । कुछ खास मुद्दा भी नहीं है, बस यूँही लिखने आया हूँ । पिछले एक महीने से कुछ लिखा नहीं पर सीखा बहुत कुछ , बस वही सब आज आपको बताने आया हूँ । तो चलिए शुरू करते हैं ज़िन्दगी की अंडरपास की एक छोटी सी कहानी, एक विद्यार्थी की जुबानी ।

दुनिया ये बात मानती है कि हर बात के कई पहलू होते हैं । कई सारी सकारात्मक बिन्दुएं होती हैं तो कई नकारात्मक बिन्दुएं होती हैं । पर ये सभी बिन्दुएँ सबके नजरिए से बनती हैं । जैसे एक नौकरीपेशा व्यक्ति का नजरिया, तो एक दुकानदार का नजरिया, किसी सड़क पर बैठे भिखारी का नजरिया, तो किसी आशा की किरण के भिखारी यानी कि एक विद्यार्थी का नजरिया ।



आप सब सोच रहे होंगे कि यह आशा की किरण का भिखारी कौन है, यह लेखक पागल हो गया है क्या । नहीं जी ऐसा नहीं है, पागल होने में तो अभी कई साल हैं । मेरा मानना है कि विद्यार्थी दो तरह के होते हैं एक जो पाने के लिए सीखता है और एक जो सबकुछ पाकर फिर सीखता है । जो कुछ पाने के लिए सीखता है वो असल में एक भिखारी ही है, वो एक शान्ति का भिखारी है, वो एक सुकून का भिखारी है, वो किसी के साथ का भिखारी है और रही बात दूसरे विद्यार्थी की तो वो प्रजाति आजकल संकटापन है क्योंकि उनकी किताबों की जगह समाज से बदलकर बाबा जी ने ले ली है (बाबा जी be like: मुझे क्यों तोड़ा?) पर इनके बारे में तो रहने ही देते हैं आज क्योंकि मैं तो खुद अभी पहली श्रेणी का विद्यार्थी हूँ । हाँ तो मैं कहाँ

था ? कहीं भी हूँ किसे फ़र्क पड़ता है ? आपने कभी ये महसूस किया है कि मुझ जैसे, आप जैसे विद्यार्थियों से किसी को फ़र्क नहीं पड़ता है ? मतलब हम कुछ भी करें सबको यही लगता है कि देख मुर्गा क्या कर रहा है । मैं क्या बोल रहा हूँ यार, समझ ही नहीं आ रहा है । मतलब ऐसे कुचक्र में फंस गया हूँ जिसमें खुद को ही पता नहीं है कि क्या कर रहा हूँ क्या नहीं कर रहा हूँ , क्या लिख रहा हूँ, क्या बोल रहा हूँ कुछ पता नहीं है ।

शायद आप मेरी दशा तो समझ चुके हैं । आप ही कुछ बता सकते हैं कि कहाँ फंस रहे हैं हम । यह पहली कहानी है जिसमें मैं आपको बोल रहा हूँ कि इसको पूरी कर दें ।

**महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं
वरिष्ठ उप-महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय , सिक्किम
गंगटोक-737102**

ई मेल : agausikkim@cag.gov.in, agaesikkim@cag.gov.in